1 थिस्सलुनीकियों

1 थिस्सलुनीकियों के परम पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह में स्थित कलीसिया को पौलुस, सिलवानुस
और तीमुथियुस की ओर से:
परमेश्वर का अनुग्रह और शांति तुम्हारे साथ रहे।

थिस्सलुनीकियों का जीवन और विश्वास

2हम तुम सब के लिए सदा परमेश्वर को धन्यवाद
देते रहते हैं। और अपनी प्रार्थनाओं में हमें तुम्हारी याद
बनी रहती है। 3प्रार्थना करते हुए हम सदा तुम्हारे उस
काम की याद करते हैं जो फल है, विश्वास का, प्रेम
से पैदा हुए तुम्हारे कठिन परिश्रम का, और हमारे प्रभु
यीशु मसीह में आशा से उत्पन्न तुम्हारी धैर्यपूर्ण
सहनशीलता का हमें सदा ध्यान बना रहता है।
4परमेश्वर के प्रिय हमारे भाइयो, हम जानते हैं कि तुम
उसके चुने हुए हो। 5क्योंकि हमारे सुसमाचार का विवरण
तुम्हारे पास मात्र शब्दों में ही नहीं पहुँचा है बल्कि पवित्र
आत्मा सामर्थ्य और गहन श्रद्धा के साथ पहुँचा है तुम
जानते हो कि हम जब तुम्हारे साथ थे, तुम्हारे लाभ के
लिये कैसा जीवन जीते थे। 6कठोर यातनाओं के बीच
तुमने पवित्र आत्मा से मिलने वाली प्रसन्नता के साथ
सुसंदेश को ग्रहण किया और हमारा तथा प्रभु का
अनुकरण करने लगे। 7और इसलिये मकिदुनिया और
अखाया के सभी विश्वासियों के लिये तुम एक आदर्श
बन गये 8क्योंकि तुमसे प्रभु के संदेश की जो गूँज उठी,
वह न केवल मकिदुनिया और अखाया में सुनी गयी
बल्कि परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास सब कहीं जाना
माना गया। सो हमें कुछ भी कहने की आवश्यकता
नहीं है।

9-10क्योंकि वे स्वयं ही हमारे विषय में बताते हैं कि
तुमने हमारा कैसा स्वागत किया था और सजीव तथा
सच्चे परमेश्वर की सेवा करने के लिए और स्वर्ग से
उसके पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा करने के लिए तुम
मूर्तियों की ओर से सजीव परमेश्वर की ओर कैसे मुड़े
थे। पुत्र अर्थात् यीशु को उसने मरे हुओं में से फिर से
जिला उठाया था। और वही परमेश्वर के आने वाले
कोप से हमारी रक्षा करता है।

थिस्सलुनीका में पौलुस का कार्य

2 हे भाइयों, तुम्हारे पास हमारे आने के सम्बन्ध में
तुम स्वयं ही जानते हो कि वह निरर्थक नहीं था।
2तुम जानते हो कि फिलिप्पी में यातनाएँ झेलने और
दुर्व्यवहार सहने के बाद भी परमेश्वर की सहायता से
हमें कड़े विरोध के रहते हुए भी परमेश्वर के सुसमाचार
को सुनाने का साहस प्राप्त हुआ। 3निश्चय ही हम जब
लोगों का ध्यान अपने उपदेशों की ओर खींचना चाहते
हैं तो वह इसलिए नहीं कि हम कोई भटके हुए हैं। और
न ही इसलिए कि हमारे उद्देश्य दूषित हैं और इसलिए
भी नहीं कि हम लोगों को छलने का जतन करते हैं।
4हम लोगों को खुश करने की कोशिश नहीं करते
बल्कि हम तो उस परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं जो
हमारे मन का भेद जानता है। 5निश्चय ही हम कभी
भी चापलूसी की बातों के साथ तुम्हारे सामने नहीं
आये। जैसा कि तुम जानते ही हो, हमारा उपदेश किसी
लोभ का बहाना नहीं है। परमेश्वर साक्षी है 6हमने लोगों
से कोई मान सम्मान भी नहीं चाहा। न तुमसे और न ही
किसी और से।

7यद्यपि हम मसीह के प्रेरितों के रूप में अपना अधिकार
जता सकते थे किन्तु हम तुम्हारे बीच वैसे ही नम्रता के
साथ रहे* जैसे एक माँ अपने बच्चे को दूध पिला कर
उसका पालन–पोषण करती है। 8हमने तुम्हारे प्रति
वैसी ही नम्रता का अनुभव किया है, इसलिये परमेश्वर
से मिले सुसमाचार को ही नहीं, बल्कि स्वयं अपने
आपको भी हम तुम्हारे साथ बाँट लेना चाहते हैं क्योंकि
तुम हमारे प्रिय हो गये हो। 9हे भाइयो, तुम हमारे कठोर
परिश्रम और कठिनाई को याद रखो जो हमने दिन–रात
इसलिये किया है ताकि हम परमेश्वर के सुसमाचार
को सुनाते हुए तुम पर बोझ न बनें। 10तुम साक्षी हो
और परमेश्वर भी साक्षी है कि तुम विश्वासियों के प्रति
हमने कितनी आस्था, धार्मिकता और दोष रहितता के
साथ व्यवहार किया है। 11तुम जानते ही हो कि जैसे
एक पिता अपने बच्चों के साथ व्यवहार करता है
12वैसे ही हमने तुममें से हर एक को आग्रह के साथ
सुख चैन दिया है। और उस रीति से जाने को कहा है

किन्तु ... रहे" कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग भी मिलता है: किन्तु तुम्हारे बीच हम बच्चे ही बने रहे।

जिससे परमेश्वर, जिसने तुम्हें अपने राज्य और महिमा
में बुला भेजा है, प्रसन्न होता है। 13और इसीलिये हम
परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते रहते हैं क्योंकि
हमसे तुमने जब परमेश्वर का वचन ग्रहण किया तो
उसे मानवीय सन्देश के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर
के सन्देश के रूप में ग्रहण किया, जैसा कि वह वास्तव
में है। और तुम विश्वासियों पर जिसका प्रभाव भी है।
14हे भाइयो, तुम यहूदियों में स्थित मसीह यीशु में परमेश्वर
की कलीसियाओं का अनुसरण करते रहे हो। तुमने
अपने साथी देश–भाइयों से वैसी ही यातनाएँ झेली हैं
जैसी उन्होंने उन यहूदियों के हाथों झेली थीं 15जिन्होंने
प्रभु यीशु को मार डाला और नबियों को बाहर खदेड़
दिया। वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते वे तो समूची
मानवता के विरोधी हैं। 16वे विधर्मियों को सुसमाचार
का उपदेश देने में बाधा खड़ी करते हैं कि कहीं उन
लोगों का उद्धार न हो जाये। इन बातों से वे सदा अपने
पापों का घड़ा भरते रहते हैं और अन्तत: अब तो
परमेश्वर का प्रकोप उन पर पूरी तरह से आ पड़ा है

फिर मिलने की इच्छा

17हे भाइयो, जहाँ तक हमारी बात है, हम थोड़े समय
के लिये तुमसे बिछुड़ गये थे। विचारों से नहीं, केवल
शरीर से। सो हम तुमसे मिलने को बहुत उतावले हो
उठे। हमारी इच्छा तीव्र हो उठी थी। 18हाँ! हम तुमसे
मिलने के लिए बहुत जतन कर रहे थे। मुझ पौलुस ने
अनेक बार प्रयत्न किया किन्तु शैतान ने उसमें बाधा
डाली। 19भला बताओ तो हमारी आशा, हमारा उल्लास
या हमारा वह मुकुट जिस पर हमें इतना गर्व है, क्या है?
क्या वह तुम्हीं नहीं हो। हमारे प्रभु यीशु के दुबारा आने
पर जब हम उसके सामने उपस्थित होंगे 20तो वहाँ तुम
हमारी महिमा और हमारे आनन्द होंगे।

3 क्योंकि हम और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकते
थे इसलिये हमने एथेंस में अकेले ही ठहर जाने का
निश्चय कर लिया। 2और हमने हमारे बन्धु तथा परमेश्वर
के लिये मसीह के सुसमाचार के प्रचार में अपने सहकर्मी
तिमुथियुस को तुम्हें सुदृढ़ बनाने और विश्वास में उत्साहित
करने को तुम्हारे पास भेज दिया 3ताकि इन वर्तमान
यातनाओं से कोई विचलित न हो उठे। क्योंकि तुम तो
जानते ही हो कि हम तो यातना के लिये ही निश्चित
किये गये हैं। 4वास्तव में जब हम तुम्हारे पास थे, तुम्हें
पहले से ही कहा करते थे कि हम पर कष्ट आने वाले
हैं, और यह ठीक वैसे ही हुआ भी है। तुम तो यह जानते
ही हो। 5इसलिए क्योंकि मैं और अधिक प्रतीक्षा नहीं
कर सकता था, इसलिये मैंने तुम्हारे विश्वास के विषय
में जानने तिमुथियुस को भेज दिया। क्योंकि मुझे डर था
कि लुभाने वाले ने कहीं तुम्हें प्रलोभित करके हमारे
कठिन परिश्रम को व्यर्थ तो नहीं कर दिया है।

6तुम्हारे पास से तिमुथियुस अभी अभी हमारे पास
वापस लौटा है और उसने हमें तुम्हारे विश्वास और
तुम्हारे प्रेम का शुभ समाचार दिया है। उसने हमें बताया
है कि तुम्हें हमारी मधुर याद आती है और तुम हमसे
मिलने को बहुत अधीर हो। वैसे ही जैसे हम तुमसे
मिलने को। 7इसलिए हे भाइयो, हमारी सभी पीड़ाओं
और यातनाओं में तुम्हारे विश्वास के कारण हमारा
उत्साह बहुत बढ़ा है। 8हाँ! अब हम फिर साँस ले पा रहे
हैं क्योंकि हम जान गये हैं कि प्रभु में तुम अटल खड़े
हो। 9तुम्हारे विषय में तुम्हारे कारण जो आनन्द हमें
मिला है, उसके लिये हम परमेश्वर का धन्यवाद कैसे
करें। अपने परमेश्वर के सामने 10रात–दिन यथासम्भव
लगन से हम प्रार्थना करते रहते हैं कि किसी प्रकार
तुम्हारा मुँह फिर देख पायें और तुम्हारे विश्वास में जो
कुछ कमी रह गयी है, उसे पूरा करें। 11हमारा परम
पिता परमेश्वर और हमारा प्रभु यीशु तुम्हारे पास आने
को हमें मार्ग दिखाये। 12और प्रभु एक दूसरे के प्रति
तथा सभी के लिए तुममें जो प्रेम है, उसकी बढ़ोतरी
करे। वैसे ही जैसे तुम्हारे लिये हमारा प्रेम उमड़ पड़ता
है। 13इस प्रकार वह तुम्हारे हृदयों को सुदृढ़ करे और
उन्हें हमारे परम पिता परमेश्वर के सामने हमारे प्रभु
यीशु के आगमन पर अपने सभी पवित्र स्वर्गदूतों के
साथ पवित्र एवम् दोष–रहित बना दे

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन

4 हे भाइयो, अब मुझे तुम्हें कुछ और बातें बतानी
हैं। यीशु मसीह के नाम पर हम तुमसे प्रार्थना
एवम् निवेदन करते हैं कि तुमने हमसे जिस प्रकार
उपदेश ग्रहण किया है, तुम्हें परमेश्वर को प्रसन्न करने
के लिये उसी के अनुसार चलना चाहिये। निश्चय ही
तुम उसी प्रकार चल भी रहे हो। किन्तु तुम वैसे ही और
अधिक से अधिक करते चलो। 2क्योंकि तुम यह जानते
हो कि प्रभु यीशु के अधिकार से हमने तुम्हें क्या निर्देश
दिये हैं। 3और परमेश्वर की यही इच्छा है कि तुम उसे
पवित्र हो जाओ, व्यभिचारों से दूर रहो, 4अपने शरीर
की वासनाओं* पर नियन्त्रण रखना सीखो–ऐसे ढंग से
जो पवित्र है और आदरणीय भी। 5न कि उस वासनापूर्ण
भावना से जो परमेश्वर को नहीं जानने वाले अधर्मियों
की जैसी है। 6यह भी परमेश्वर की इच्छा है कि इस
विषय में कोई अपने भाई के प्रति कोई अपराध न करे
या कोई अनुचित लाभ न उठाये; क्योंकि ऐसे सभी पापों
के लिये प्रभु दण्ड देगा जैसा कि हम तुम्हें बता ही चुके
हैं और तुम्हें सावधान भी कर चुके हैं। 7परमेश्वर ने
हमें अपवित्र बनने के लिये नहीं बुलाया है बल्कि पवित्र
बनने के लिये बुलाया है। 8इसलिये जो इस शिक्षा को

वासनाओं इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है:
अपनी ही पत्नी के साथ कैसे रहा जाता है।

नकारता है वह किसी मनुष्य को नहीं नकार रहा है
बल्कि परमेश्वर को ही नकार रहा है। उस परमेश्वर
को जो तुम्हें अपनी पवित्र आत्मा भी प्रदान करता है।
9अब तुम्हें तुम्हारे भाई बहनों के प्रेम के विषय में भी
लिखा जाये, इसकी तुम्हें आवश्यकता नहीं है क्योंकि
परमेश्वर ने स्वयं तुमको एक दूसरे के प्रति प्रेम करने
की शिक्षा दी है। 10और वास्तव में तुम अपने सभी
भाइयों के साथ समूचे मकिदुनिया में ऐसा ही कर भी
रहे हो। किन्तु भाइयो! हम तुमसे ऐसा ही अधिक से
अधिक करने को कहते हैं।
11शांतिपूर्वक जीने को आदर की वस्तु समझो। अपने
काम से काम रखो। स्वयं अपने हाथों से काम करो।
जैसा कि हम तुम्हें बता ही चुके हैं। 12इससे कलीसिया
से बाहर के लोग तुम्हारे जीने के ढंग का आदर करेंगे।
इससे तुम्हें किसी भी दूसरे पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

प्रभु का लौटना

13हे भाइयो, हम चाहते हैं कि जो चिर–निद्रा में सो
गये हैं, तुम उनके विषय में भी जानो ताकि तुम्हें उन
औरों के समान, जिनके पास आशा नहीं है, शोक न
करना पड़े। 14क्योंकि यदि हम यह विश्वास करते हैं
कि यीशु की मृत्यु हो गयी और वह फिर से जी उठा, तो
उसी प्रकार जिन्होंने उसमें विश्वास करते हुए प्राण
त्याग दिए हैं, उनके साथ भी परमेश्वर वैसा ही करेगा।
और यीशु के साथ वापस ले जायेगा। 15जब प्रभु का
फिर से आगमन होगा तो हम जो जीवित हैं और अभी
यहीं हैं उनसे आगे नहीं निकल पाएँगे जो मर चुके हैं।
16क्योंकि स्वर्गदूतों का मुखिया जब अपने ऊँचे स्वर से
आदेश देगा तथा जब परमेश्वर की बिगुल बजेगी तो
प्रभु स्वयं स्वर्ग से उतरेगा। उस समय जिन्होंने मसीह में
प्राण त्यागे हैं, वे पहले उठेंगे। 17उसके बाद हमें जो
जीवित हैं, और अभी भी यहीं हैं उनके साथ ही हवा में
प्रभु से मिलने के लिये बादलों के बीच ऊपर उठा लिया
जाएगा और इस प्रकार हम सदा के लिये प्रभु के साथ
हो जायेंगे। 18अत: इन शब्दों के साथ एक दूसरे को
उत्साहित करते रहो।

प्रभु के स्वागत को तैयार रहो

5 हे भाइयो, समयों और तिथियों के विषय में तुम्हें
लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है 2क्योंकि
तुम स्वयं बहुत अच्छी तरह जानते हो कि जैसे चोर रात
में चुपके से चला आता है, वैसे ही प्रभु के फिर से
लौटने का दिन भी आ जायेगा। 3जब लोग कह रहे होंगे
कि "सब कुछ शांत और सुरक्षित है" तभी जैसे एक
गर्भवती स्त्री को अचानक प्रसव वेदना आ घेरती है वैसे
ही उनपर विनाश उतर आयेगा और वे कहीं बच कर
भाग नहीं पायेंगे। 4किन्तु हे भाइयो, तुम अन्धकार के
वासी नहीं हो कि तुम पर वह दिन चुपके से चोर की
तरह आ जाये। 5तुम सब तो प्रकाश के पुत्र हो और दिन
की संतान हो। हम न तो रात्रि से सम्बन्धित हैं और न
ही अन्धेरे से। 6इसलिये हमें औरों की तरह सोते नहीं
रहना चाहिये, बल्कि सावधानी के साथ हमें तो अपने
पर नियन्त्रण रखना चाहिये। 7क्योंकि जो सोते हैं, रात
में सोते हैं और जो नशा करते हैं, वे भी रात में ही
मदमस्त होते हैं। 8किन्तु हम तो दिन से सम्बन्धित हैं
इसलिए हमें अपने पर काबू रखना चाहिये। आओ
विश्वास और प्रेम की झिलम धारण कर लें और
उद्धार पाने की आशा को शिरस्त्राण की तरह ओढ़ लें।
9क्योंकि परमेश्वर ने हमें उसके प्रकोप के लिये
नहीं, बल्कि हमारे प्रभु यीशु द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के
लिये बनाया है। 10यीशु मसीह ने हमारे लिये प्राण त्याग
दिये ताकि चाहे हम सजीव हैं चाहे मृत, जब वह पुन:
आए उसके साथ जीवित रहें। 11इसलिये एक दूसरे को
सुख पहुँचाओ और एक दूसरे को आध्यात्मिक रूप से
सुदृढ़ बनाते रहो। जैसा कि तुम कर भी रहे हो।

अंतिम निर्देश और अभिवादन

12हे भाइयो, हमारा तुमसे निवेदन है कि जो लोग
तुम्हारे बीच परिश्रम कर रहे हैं और प्रभु में जो तुम्हें
राह दिखाते हैं, उनका आदर करते रहो। 13हमारा
तुमसे निवेदन है कि उनके काम के कारण प्रेम के
साथ उन्हें पूरा आदर देते रहो। परस्पर शांति से रहो।
14हे भाइयो, हमारा तुमसे निवेदन है आलसियों को
चेताओ, डरपोकों को प्रोत्साहित करो, दीनों की सहायता
में रुचि लो, सब के साथ धीरज रखो। 15देखते रहो कोई
बुराई का बदला बुराई से न दे, बल्कि सब लोग सदा
एक दूसरे के साथ भलाई करने का ही जतन करें।
16सदा प्रसन्न रहो। 17 प्रार्थना करना कभी न छोड़ो।
18हर परिस्थिति में परमेश्वर का धन्यवाद करो।
19पवित्र आत्मा के कार्य का दमन मत करते रहो।
20नबियों के संदेशों को कभी छोटा मत जानो। 21हर
बात की असलियत को परखो, जो उत्तम है, उसे ग्रहण
किये रहो 22और हर प्रकार की बुराई से बचे रहो।
23शांति का स्रोत परमेश्वर स्वयं तुम्हें पूरी तरह
पवित्र करे। पूरी तरह उसको समर्पित हो जाओ और
तुम अपने सम्पूर्ण अस्तित्व अर्थात् आत्मा, प्राण और
देह को हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूर्णत: दोष
रहित बनाये रखो। 24वह परमेश्वर जिसने तुम्हें बुलाया
है, विश्वास के योग्य है। निश्चयपूर्वक वह ऐसा ही
करेगा। 25हे भाइयो! हमारे लिये भी प्रार्थना करो। 26सब
भाइयों का पवित्र चुम्बन से सत्कार करो। 27तुम्हें प्रभु
की शपथ देकर मैं यह आग्रह करता हूँ कि इस पत्र को
सब भाइयों को पढ़ कर सुनाया जाये। 28हमारे प्रभु यीशु
मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।